Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJIF 2016 = 4.44, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.48612, AUG-SEPT 2017, VOL- 4/23

कुपोषण के शिकार पूर्वशालेय बालकों के पोषण स्तरों का मूल्याँकन

Ranjana Gupta, Ph. D.

Associate Professor- Home Science, K. R. Girls P.G. College Mathura

Abstract

कुपोषण की समस्या' आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की समस्या है जो विकासशील भारत के ग्रामीण परिवेश में और भी अधिक गम्भीर तथा व्यापक है। जिसके बचाव के लिए अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तरों पर सरकारी, गैर सरकारी स्वैच्छिक अभिकरणों द्वारा विभिन्न योजनाओं, परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन द्वारा समस्या– समाधान के लिए सतत् प्रयास किए जा रहे हैं ताकि इस समस्या से छुटकारा पाया जा सके।

शब्दावली : पूर्वशालेय बालक', कुपोषण , एन्थ्रोपोमीट्रिक मापन, उत्तरदायी कारक ।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

शोध प्ररचना : शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन को सम्पादित करने के लिए वर्णनात्मक शोध प्ररचना **(Explainatary Research Design)** को चुना है ताकि अध्ययन की प्रस्तुति सरल किन्तु तार्किक रूप में की जा सके।

कुपोषण के प्रसंग में पूर्व विद्वानों द्वारा आयु सापेक्ष 6 वर्ष से कम आयु के बालकों को 'पूर्वशालेय बालक' ;च्तम ैबीववस बेपसकद्ध माना गया है। इसी को शोधार्थी ने 'मानक' मानकर पूर्वशालेय बालकों के पोषण स्तरों का अध्ययन तीन आधारोंः (1) जातियों सवर्ण, पिछड़ी, अनुसूचित के आधार पर, (2) परिवारों के आर्थिक स्तरों के आधार पर, तथा (3) बालकों के 'एन्थोपोमीट्रिक मापन' के आधार पर; मूल्यॉकन किया गया है। माताओं के द्वारा गर्भधारण करने का पूर्व इतिहास, जन्मे बच्चे, जीवित बच्चे, मर गए बच्चे, गर्भपातों की संख्या, गर्भधारण में उत्पन्न समस्याएं, डिलीवरी होने का प्रकार (सामान्य, सीजेरियन, फोरसेप), जन्म से बचपन तक बच्चों को हुई बीमारियॉ तथा बालकों की उम्र के आधार पर एन्थ्रोपोमीट्रिक मापन के अनुसार उनका बजन, ऊॅचाई, सिर का आकार तथा लड़का–लड़की का लिंग सापेक्ष तुलनात्मक अध्ययन गहनता के साथ किया गया है।

प्राथमिक तथ्यों का विश्लेषण एंव निर्वचन :

महिला सूचनादात्रियों के व्यक्तिगत गहन पूछताछ तथा साक्षात्कारों से प्राप्त प्राथमिक जानकारी पर निम्न तालिका नं. 5(1) संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका नं. (1) : गर्भवती तथा पूर्वशालेय बालकों की माताओं सम्बन्धी वितरण

क्रम	गर्भवती तथा पूर्वशालेय बालकों की माताएं	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	गर्भवती माताएं	30	10.71
2	पूर्वशालेय बालकों की माताएं	250	89.29
	समस्त	280	100.00

प्रस्तुत तालिका के प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण से सुस्पष्ट है कि अध्ययन की गयी कुल 280 महिला सूचनादात्रियों में से 30(10.71 प्रतिशत) गर्भवती तथा 250(89.29 प्रतिशत) पूर्वशालेय बालकों की माताएं पायी गयी हैं।

तालिका नं. (2) : गर्भवती व पूर्वशालेय बालकों की माताओं का परिवारों के आर्थिक स्तरों के सापेक्ष वितरण

क्रम	गर्भवती व पूर्वशालेय बालकों की माताओं सम्बन्धी विवरण	निदर्शितों की आवृत्तियाँ/प्रतिशत *मध्यम*	*मध्यम निम्न*	*निम्न*	योग (प्रतिशत)
1	गर्भवती माताएं	03 (01.07)	10 (03.57)	17 (06.07)	30 (10.71)
2	पूर्वशालेय बालकों की माताएं	11 (03.93)	46 (16.43)	193 (68.93)	250 (89.29)
	समस्त (प्रतिशतता)	14 (05.00)	56 (20.00)	210 (75.00)	280 (100.00)

तालिका नं. (3) : 250 पूर्वशालेय बालकों की माताओं के अनुसार उनके बालकों को हुयी बीमारियाँ

क्रम	जन्म से बचपन तक हुई बीमारियाँ	सूचनादात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1	टोन्सिल्स	10	4.00
2	पीलिया	20	8.00
3	सूखा रोग	160	64.00
4	दमा/साँस की बीमारी	18	7.20
5	छोटी चेचक	05	2.00
6	निमोनियाँ	03	1.20
7	ऐलर्जी	10	4.00
8	बड़ी चेचक	01	0.40
9	प्रायमरी कम्पलैक्स	01	0.40
10	फेफड़ों की बीमारियाँ	06	2.40
11	घेंघा	02	0.80
12	आँखों की बीमारियाँ	08	3.20
13	पैर कमजोर हो जाना	06	2.40
	समस्त	250	100.00

प्रस्तुत तालिका के ऑकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि पूर्वशालेय बालकों वाली 250 माताओं में से 10(4 प्रतिशत) महिलाओं ने बताया कि उनके बच्चों के टोन्सिल्स हो जाते हैं, 20(8 प्रतिशत) महिलाओं ने बताया कि उनके बच्चों के पीलिया हुआ, 160(64 प्रतिशत) सर्वाधिक महिलाओं ने बताया कि उनके बच्चों को सूखा रोग हुआ, 18(7.20 प्रतिशत) ने बताया कि उनके बच्चों को सॉस की बीमारी हुई, 5(2 प्रतिशत) महिलाओं ने बताया कि उनके बच्चों को छोटी चेचक निकली, 3(1.20 प्रतिशत) ने बताया कि उनके बच्चों

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

को छोटी चेचक निकली, 10(4 प्रतिशत) महिलाओं ने बच्चों को ऐलर्जी होना, 1(0.40 प्रतिशत) महिलाओं ने बड़ी चेचक निकलना, 1(0.40 प्रतिशत) महिलाओं ने प्रायमरी काम्पलैक्स, 6 (2.40 प्रतिशत) महिलाओं ने उनके बच्चों को फेफड़े की बीमारी, 2(0.80 प्रतिशत) महिलाओं ने घेंघा, 8(3.20 प्रतिशत) महिलाओं ने बताया कि उनके बच्चों को ऑखों के रोग हुए एवं 6(2.40 प्रतिशत) महिलाओं ने बताया कि उनके बच्चों के पैर कमजोर हुए जिसकी बजह से बहुत दिनों बाद चलना शुरू किया; शोधार्थी की मान्यता है कि यह सब रोग/बीमारियॉ कुपोषण के ही दुष्प्रभाव (प्रतिफलन) हैं।

तालिका नं. (4) : कुपोषण हेतु सामान्य उत्तरदायी कारक

क्रम	कुपोषण हेतु सामान्य उत्तरदायी कारक	सूचनादाताओं आवृत्तियाँ/प्रतिशत *हाँ*	*नहीं*	*कह नहीं सकते*	योग (प्रतिशत)
1	निर्धनता	225 (75.00)	12 (04.00)	63 (21.00)	300 (100.00)
2	समुचित ज्ञान का अभाव	189 (63.00)	36 (12.00)	75 (25.00)	300 (100.00)
3	पौष्टिक व सन्तुलित आहार न मिलना	228 (76.00)	18 (06.00)	54 (18.00)	300 (100.00)
4	परहेज न करना	249 (83.00)	15 (05.00)	36 (12.00)	300 (100.00)
5	अस्वच्छता	261 (87.00)	12 (04.00)	27 (09.00)	300 (100.00)
6	पूरक पोषाहारों का आभाव	270 (90.00)	15 (05.00)	15 (05.00)	300 (100.00)

उपरोक्त समस्त विवेचन के विश्लेषण के प्रकाश में स्पष्ट है कि ग्रामीण जनसंख्या में कुपोषण के उत्तरदायी कारकों के अन्तर्गतः (1) सामान्य उत्तरदायी कारकों मेंः निर्धनता, रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास, अज्ञानता, अस्वच्छता, स्वास्थ्य विकार, पोषक आहारों का अभाव, परहेज न करना, भोजन पकाने की अनुपयुक्त विधियॉ तथा (2) विशिष्ट उत्तरदायी कारकों मेंः निम्न स्तरीय जीवनयापन, उच्च जन्म दरें, माता के भोजन का निम्न स्तरीय होना, पारिवारिक सदस्यों तथा बच्चों की संख्या अधिक होना, सन्तुलित भोजन तथा पोषक तत्वों का अभाव, भोजन पकाने की अनुपयुक्त विधियां, जनसंख्या अतिरेक, प्रदूषित पर्यावरण, परिवारों की आय कम तथा व्यय अधिक होना आदि कुपोषण हेतु उल्लेखनीय कारक हैं। स्पष्टतः कोई एक कारण कुपोषण हेतु उत्तरदायी नहीं है, अपितु कुपोषण के लिए विभिन्न कारक उत्तरदायी हैं। सामान्यतः ग्रामीण समुदाय के परिवारों में जहॉ आय कम होती है, जिससे ग्रामीण बच्चों को पोषणिक तथा सन्तुलित आहार नहीं मिल पाता, अतः बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास पर कुपोषण प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शोध अध्ययन से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों के अनुसार परीक्षण हेतु निर्मित की गयी परिकल्पनाओं के सम्बन्ध में सत्यता तथा सार्थकता सम्बन्धी निष्कर्ष इस प्रकार है कि–

- यह परिकल्पना सत्य तथा सार्थक पाई गयी है कि ग्रामीण जनसंख्या में कुपोषण की समस्या के लिए निर्धनता तथा समुचित ज्ञान का अभाव होना मूल कारण है
- यह परिकल्पना भी सत्य एवं सार्थक पायी गयी है कि बच्चों में कुपोषण के लिए एकमात्र उत्तरदायी कारण गर्भवती माताओं को पौष्टिक, पूरक तथा सन्तुलित आहार न मिलना है
- यह परिकल्पना भी सत्य तथा सार्थक सिद्ध हुई है कि बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर कुपोषण का प्रत्यक्ष तथा गहरा दुष्प्रभाव पड़ता है
- यह परिकल्पना भी सत्य तथा सार्थक पायी गयी है कि कुपोषण के लिए निम्न स्तर का जीवनयापन कुपोषण के लिये जिम्मेदार कारक है।

इस सम्बन्ध में शोधार्थी का सुझाव है कि–

(1) ग्रामीण अंचलों में शासन को चाहिए कि 'निर्धनता उन्मूलन' की दिशा में निर्धनता उन्मूलन विकास कार्यक्रम चलाने हेतु विशेष प्रयास करे ताकि निर्बल वर्गों के आर्थिक स्तरों में वांच्छित सुधार सम्भव हो सके।

(2) ग्रामीण परिवारों विशेषतः दूरस्थ क्षेत्रों में परिवार कल्याण कार्यक्रमों में तेजी लाई जाय ताकि उनमें कम सन्तानों के प्रति जागरूकता जनित हो सके तथा जनसंख्या अतिरेक की समस्या पर कुछ अंकुश लग सके।

(3) ग्रामीण परिवेश में विशेषकर महिलाओं में पोषणिक तथा सन्तुलित आहार ग्रहण करने व पोषक तत्वों के प्रति उनमें जागरूकता जनित करने हेतु सामुदायिक स्तरों पर शासन द्वारा जन सहयोग से जागरूकता अभियान चलाए जांय।

(4) ग्रामीण दूरस्थ अंचलों में शासन स्तर से विशेषकर निर्बल वर्गों, अनुसूचित जाति बस्तियों में प्रतिरक्षक टीकाकरण तथा 'स्वच्छता कार्यक्रम' व्यापक स्तर पर चलाए जांय।

(5) ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या के अनुपात में, चिकित्सीय व स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने की दिशा में विशेष ध्यानाकर्षित किया जाय ताकि गॉवों की जनता को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराकर उन्हें कुपोषण से बचाया जा सके।

(6) शासन द्वारा पोषाहार कार्यक्रमों को वरीयता के आधार पर गॉवों की निर्धन बस्तियों में प्रभावी तौर पर सुचारू क्रियान्वित किया जाय।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ :

अमर्त्य सेन *(2006)* *भारत में गरीबी का परिदृश्य, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन।*

अरोरा सन्तोष *(2014)* *पॉपुलेशन एण्ड ऐजुकेशन प्रॉबलम्स इन इण्डिया, 'इकोनोमिक वीकली', दिल्ली, दिसम्बर 2014*

इन्दौलिया रघुवीर *(2010)* *ग्रामीण भारत में कुपोषणः समस्या एवं समाधान, रिसर्च पब्लिकेसन्स (राज0) जयपुर।*

कमलेश महाजन *(2014)* *सामाजिक जनांकिकी, परिवार कल्याण कार्यक्रम, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण*

गॉवदा लक्ष्मी *(2001)* *ग्रामीण भारत की असली तश्वीर, सुगम प्रकाशन बॉम्बे।*

ज़फरूल इस्लाम *(2015)* *अलीगढ़ नगर की मलिन बस्तियों में कुपोषण की समस्या का समाजशास्त्रीय अध्ययन, अप्रकाशित 'शोध–प्रबन्ध', 'शोध परियोजना' ए0एम0यू0 अलीगढ़।*

जावेद उस्मानी *(2011)* *मुस्लिम समुदाय में कुपोषण की समस्या, प्रकाशित शोधपत्र, 'इण्डियन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स', नई दिल्ली*

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies